

व्यंग्य

# दस दिन का अनशन

- हरिशंकर परसाई

## 10 जनवरी

आज मैंने बन्नू से कहा, देख बन्नू, दौरे ऐसा आ गया है कि संसद, कानून, संविधान, न्यायालय सब बेकार हो गये हैं। बड़ी-बड़ी मांगें अनशन और आत्मदाह की धमकी से पूरी हो रही हैं। 20 साल का प्रजातंत्र ऐसा पक गया है कि एक आदमी के मर जाने से या भूखा रह जाने की धमकी से 50 करोड़ आदमियों के भाग्य का फैसला हो रहा है। इस वक्त तू भी उस औरत के लिए अनशन कर डाल।

बन्नू सोचने लगा। वह राधिका बाबू की बीवी सावित्री के पीछे सालों से पड़ा है। भगाने की कोशिश में एक बार पिट भी चुका है। तलाक दिलवा कर उसे घर में डाल नहीं सकता, क्योंकि सावित्री बन्नू से नफरत करती है।

सोच कर बोला, मगर इसके लिए अनशन हो भी सकता है ?

मैंने कहा, इस वक्त हर बात के लिए हो सकता है। अभी बाबा सनकीदास ने अनशन कर कानून बनवा दिया है कि हर आदमी जटा रखेगा और उसे कभी धोएगा नहीं। तमाम सिरों से दुर्गन्ध निकल रही है। तेरी मांग तो बहुत छोटी है - सिर्फ एक औरत के लिए।

सुरेन्द्र वहां बैठा था। बोला, यार कैसी बात करते हो! किसी की बीवी को हड़पने के लिए अनशन होगा? हमें कुछ शर्म तो आनी चाहिए। लोग हंसेंगे।

मैंने कहा, अरे यार, शर्म तो बड़े-बड़े अनशनिया साधु-संतों को नहीं आई। हम तो मामूली आदमी हैं। जहां तक हंसने का सवाल है, गो रक्षा आंदोलन पर सारी दुनिया के लोग इतना हंस चुके हैं कि उनका पेट दुखने लगा है। अब कम से कम दस सालों तक कोई आदमी हंस नहीं सकता। जो हंसेगा वो पेट के दर्द से मर जाएगा।

बन्नू ने कहा, सफलता मिल जायेगी ?

मैंने कहा, यह तो 'इशू' बनाने पर है। अच्छा बन गया तो औरत मिल जाएगी। चल, हम 'एक्सपर्ट' के पास चल कर सलाह लेते हैं। बाबा सनकीदास विशेषज्ञ हैं। उनकी अच्छी 'प्रेक्टिस' चल रही है। उनके निर्देशन में इस वक्त चार आदमी अनशन कर रहे हैं।

हम बाबा सनकीदास के पास गए। पूरा मामला सुन कर उन्होंने कहा, ठीक है। मैं इस मामले को हाथ में ले सकता हूँ। जैसा कहूँ वैसा करते जाना। तू आत्मदाह की धमकी दे सकता है ?

बन्नू कांप गया। बोला, मुझे डर लगता है।

जलना नहीं है रे। सिर्फ धमकी देना है। मुझे तो उसके नाम से भी डर लगता है। बाबा ने कहा, अच्छा तो फिर अनशन कर डाल। 'इशू' हम बनायेंगे।

बन्नू फिर डरा। बोला, मर तो नहीं जाऊंगा।

बाबा ने कहा, चतुर खिलाड़ी नहीं मरते। वे एक आंख मेडिकल रिपोर्ट पर और दूसरी मध्यस्थ पर रखते हैं। तुम चिंता मत करो। तुम्हें बचा लेंगे और वह औरत भी दिला देंगे।

## 11 जनवरी

आज बन्नू आमरण अनशन पर बैठ गया। तबू में धूप-दीप जल रहे हैं। एक पार्टी भजन गा रही है - 'सबको सन्मति दे भगवान।' पहले ही दिन पवित्र वातावरण बन गया है। बाबा सनकीदास इस कला के बड़े उस्ताद हैं। उन्होंने बन्नू के नाम से जो वक्तव्य छपा कर बंटवाया है, वो बड़ा जोरदार है। उसमें बन्नू ने कहा है कि 'मेरी आत्मा से पुकार उठ रही है कि मैं अधूरा हूँ। मेरा दूसरा खंड सावित्री में है। दोनों आत्म-खंडों को मिला कर एक करो या मुझे भी शरीर से मुक्त करो। मैं आत्म-खंडों को मिलाने के लिए आमरण अनशन पर बैठा हूँ। मेरी मांग है कि सावित्री मुझे मिले। यदि नहीं मिलती तो इस अनशन से इस आत्म-खंड को अपनी नश्वर देह से मुक्त कर दूंगा। मैं सत्य पर हूँ, इसलिए निडर हूँ। सत्य की जय हो!'

सावित्री गुस्से से भरी हुई आई थी। बाबा सनकीदास से कहा, यह हरामजादा मेरे लिए

अनशन पर बैठा है ना ?

बाबा बोले, देवी, उसे अपशब्द मत कहो। वह पवित्र अनशन पर बैठा है। पहले हरामजादा रहा होगा। अब नहीं रहा। वह अनशन कर रहा है।

सावित्री ने कहा, मगर मुझे तो पूछा होता। मैं तो इस पर थूकती हूँ।

बाबा ने शांति से कहा, देवी, तू तो 'इशू' है। 'इशू' से थोड़े ही पूछा जाता है। गोरक्षा आंदोलन वालों ने गाय से कहां पूछा था कि तेरी रक्षा के लिए आंदोलन करे या नहीं। देवी, तू जा। मेरी सलाह है कि अब तुम या तुम्हारा पति यहां न आएँ। एक-दो दिन में जनमत बन जाएगा और तब तुम्हारे अपशब्द जनता बर्दाश्त नहीं करेगी।

वह बड़बड़ाती हुई चली गई। बन्नू उदास हो गया। बाबा ने समझाया, चिंता मत करो। जीत तुम्हारी होगी। अंत में सत्य की ही जीत होती है।

## 13 जनवरी

बन्नू भूख का बड़ा कच्चा है। आज तीसरे ही दिन कराहने लगा। बन्नू पूछता है, जयप्रकाश नारायण आये ?

मैंने कहा, वे पांचवें या छठे दिन आते हैं। उनका नियम है। उन्हें सूचना दे दी है। वह पूछता है, विनोबा ने क्या कहा है इस विषय में ?

बाबा बोले, उन्होंने साधन और साध्य की मीमांसा की है, पर थोड़ा तोड़ कर उनकी बात को अपने पक्ष में उपयोग किया जा सकता है।

बन्नू ने आंखें बंद कर लीं। बोला, भैया, जयप्रकाश बाबू की जल्दी बुलाओ।

आज पत्रकार भी आये थे। बड़ी दिमाग-पच्ची करते रहे।

पूछने लगे, उपवास का हेतु कैसा है ? क्या यह सार्वजनिक हित में है ?

बाबा ने कहा, हेतु अब नहीं देखा जाता। अब तो इसके प्राण बचाने की समस्या है। अनशन पर बैठना इतना बड़ा आत्म-बलिदान है कि हेतु भी पवित्र हो जाता है।

मैंने कहा, और सार्वजनिक हित इससे होगा। कितने ही लोग दूसरे की बीवी छीनना चाहते हैं, मगर तरकीब उन्हें नहीं मालूम। अनशन अगर सफल हो गया, तो जनता का मार्गदर्शन करेगा।

## 14 जनवरी

बन्नू और कमजोर हो गया है। वह अनशन तोड़ने की धमकी हम लोगों को देने लगा है। इससे हम लोगों का मुंह काला हो जायेगा। बाबा सनकीदास ने उसे बहुत समझाया।

आज बाबा ने एक और कमाल कर दिया। किसी स्वामी रसानंद का वक्तव्य अखबारों में छपवाया है। स्वामी जी ने कहा है कि मुझे तपस्या के कारण भूत और भविष्य दिखता है। मैंने पता लगाया है कि बन्नू पूर्वजन्म में ऋषि था और सावित्री ऋषि की धर्मपत्नी। बन्नू का नाम उस जन्म में ऋषि वनमानुस था। उसने तीन हजार वर्षों के बाद अब फिर नरदेह धारण की है। सावित्री का इससे जन्म-जन्मानंतर का संबंध है। यह घोर अधर्म है कि एक ऋषि की पत्नी को राधिका प्रसाद जैसा साधारण आदमी अपने घर में रखे। समस्त धर्मप्राण जनता से मेरा आग्रह है कि इस अधर्म को न होने दें।

इस वक्तव्य का अच्छा असर हुआ। कुछ लोग 'धर्म की जय हो!' नारे लगाते पाये गये। एक भीड़ राधिका बाबू के घर के सामने नारे लगा रही थी -

'राधिका प्रसाद पापी है! पापी का नाश हो! धर्म की जय हो!'

स्वामी जी ने मंदिरों में बन्नू की प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना का आयोजन करा दिया है।

## 15 जनवरी

रात को राधिका बाबू के घर पर पत्थर फेंके गए।

जनमत बन गया है। स्त्री-पुरुषों के मुख से यह वाक्य हमारे एजेंटों ने सुने -

'बेचारे को पांच दिन हो गए। भूखा पड़ा है।'

'धन्य है इस निष्ठा को!'

'मगर उस कठकरेजी का कलेजा नहीं पिघला।'

'उसका मरद भी कैसा बेशरम है!'  
'सुना है पिछले जन्म में कोई ऋषि था।'  
'स्वामी रसानंद का वक्तव्य नहीं पढ़ा!'  
'बड़ा पाप है ऋषि की धर्मपत्नी को घर में डाले रखना।'

आज ग्यारह सौभाग्यवतियों ने बन्नू को तिलक किया और आरती उतारी।

बन्नू बहुत खुश हुआ। सौभाग्यवतियों को देख कर उसका जी उछलने लगा है। अखबार अनशन के समाचारों से भरे हैं।

आज एक भीड़ हमने प्रधानमंत्री के बंगले पर हस्तक्षेप की मांग करने और बन्नू के प्राण बचाने की अपील करने भेजी थी। प्रधानमंत्री ने मिलने से इनकार कर दिया।

देखते हैं कब तक नहीं मिलते।

शाम को जयप्रकाश नारायण आ गए। नाराज थे। कहने लगे, 'किस-किस के प्राण बचाऊं मैं? मेरा क्या यही धंधा है? रोज कोई अनशन पर बैठ जाता है और चिल्लाता है प्राण बचाओ। प्राण बचाना है तो खाना क्यों नहीं लेता? प्राण बचाने के लिए मध्यस्थ की कहां जरूरत है? यह भी कोई बात है! दूसरे की बीवी छीनने के लिए अनशन के पवित्र अस्त्र का उपयोग किया जाने लगा है।'

हमने समझाया, 'यह 'इशू' जरा दूसरे किस्म का है। आत्मा से पुकार उठी थी।' वे शांत हुए। बोले, अगर आत्मा की बात है तो मैं इसमें हाथ डालूंगा।

मैंने कहा, 'फिर कोटि-कोटि धर्मप्राण जनता की भावना इसके साथ जुड़ गई है।' जयप्रकाश बाबू मध्यस्थता करने की राजी हो गए। वे सावित्री और उसके पति से मिल कर फिर प्रधानमंत्री से मिलेंगे।

बन्नू बड़े दीन भाव से जयप्रकाश बाबू की तरफ देख रहा था।

बाद में हमने उससे कहा, 'अबे साले, इस तरह दीनता से मत देखा कर। तेरी कमजोरी ताड़ लेगा तो कोई भी नेता तुझे मुसम्मि का रस पिला देगा। देखता नहीं है, कितने ही नेता झोलों में मुसम्मि रखे तबू के आस-पास घूम रहे हैं।'

## 16 जनवरी

जयप्रकाश बाबू की 'मिशन' फेल हो गई। कोई मानने को तैयार नहीं है। प्रधानमंत्री ने कहा, 'हमारी बन्नू से सहानुभूति है, पर हम कुछ नहीं कर सकते। उससे उपवास तुड़वाओ, तब शांति से वार्ता द्वारा समस्या का हल ढूँढा जायेगा।'

हम निराश हुए। बाबा सनकीदास निराश नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'पहले सब मांग को नामंजूर करते हैं। यही प्रथा है। अब आंदोलन तीव्र करो। अखबारों में छपवाओ कि बन्नू की पेशाब में काफी 'एसीटोन' आने लगा है। उसकी हालत चिंताजनक है। वक्तव्य छपवाओ कि हर कीमत पर बन्नू के प्राण बचाये जाएँ। सरकार बेटी-बेटी क्या देख रही है? उसे तुरंत कदम उठाना चाहिए जिससे बन्नू के बहुमूल्य प्राण बचाये जा सकें।'

बाबा अद्भुत आदमी हैं। कितनी तरकीबें उनके दिमाग में हैं। कहते हैं, 'अब आंदोलन में जातिवाद का पुट देने का मौका आ गया है। बन्नू ब्राह्मण है और राधिका प्रसाद कायस्थ। ब्राह्मणों को भड़काओ और इधर कायस्थों को। ब्राह्मण सभा का मंत्री आगामी चुनाव में खड़ा होगा। उससे कहो कि यही मौका है ब्राह्मणों के वोट इकट्ठे ले लेने का।'

आज राधिका बाबू की तरफ से प्रस्ताव आया था कि बन्नू सावित्री से राखी बंधवा ले।

हमने नामंजूर कर दिया।

## 17 जनवरी

आज के अखबारों के शीर्षक हैं -

'बन्नू के प्राण बचाओ!'

'बन्नू की हालत चिंताजनक!'

'मंदिरों में प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना!'

एक अखबार में हमने विज्ञापन रेट पर यह भी छपवा लिया-

'कोटि-कोटि धर्म-प्राण जनता की मांग -

बन्नू की प्राण-रक्षा की जाए।  
बन्नू की मृत्यु के परिणाम भयंकर होंगे!'  
ब्राह्मण सभा के मंत्री का वक्तव्य छप गया। उन्होंने ब्राह्मण जाति की इज्जत का

मामला इसे बना लिया था। सीधी कार्यवाही की धमकी दी थी।

हमने चार गुंडों को कायस्थों के घरों पर पत्थर फेंकने के लिए तय कर लिया है।

इससे निपट कर वही लोग ब्राह्मणों के घर पर पत्थर फेंकेंगे।

पैसे बन्नू ने पेशगी दे दिये हैं।

बाबा का कहना है कि कल या परसों तक कर्पूरु लगवा दिया जाना चाहिए। दफा 144 तो लग ही जाये। इससे 'केस' मजबूत होगा।

## 18 जनवरी

रात को ब्राह्मणों और कायस्थों के घरों पर पत्थर फिंक गए।

सुबह ब्राह्मणों और कायस्थों के दो दलों में जमकर पथराव हुआ।

शहर में दफा 144 लग गयी। सनसनी फैली हुई है।

हमारा प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री से मिला था। उन्होंने कहा कि 'इसमें कानूनी अड़चनें हैं। विवाह कानून में संशोधन करना पड़ेगा।' हमने कहा तो संशोधन करवा दीजिए।

अध्यादेश जारी करवा दीजिए। अगर बन्नू मर गया तो सारे देश में आग लग जायेगी। वे कहने लगे, 'पहले अनशन तुड़वाओ!'

हमने कहा, 'सरकार सैद्धांतिक रूप से मांग को स्वीकार कर ले और एक कमिटी बिठा दे, जो रास्ता बताये कि वह औरत इसे कैसे मिल सकती है।'

सरकार अभी स्थिति को देख रही है। बन्नू को और कष्ट भोगना होगा।

मामला जहां का तहां रहा। वार्ता में 'डेडलॉक' आ गया है।

छुटपुट झगड़े हो रहे हैं।

रात को हमने पुलिस चौकी पर पत्थर फिंकवा दिये। इसका अच्छा असर हुआ।

'प्राण बचाओ' - की मांग आज और बढ़ गयी।

## 19 जनवरी

बन्नू बहुत कमजोर हो गया है। घबड़ाता है। कहीं मर न जाए।

बकने लगा है कि हमलोगों ने उसे फंसा दिया है। कहीं वक्तव्य दे दिया तो हमलोग 'एक्सपोज' हो जायेंगे।

कुछ जल्दी ही करना पड़ेगा। हमने उससे कहा कि अगर वह यों ही अनशन तोड़ देगा

तो जनता उसे मार डालेगी।

प्रतिनिधिमंडल फिर मिलने जायेगा।

## 20 जनवरी

'डेडलॉक' सिर्फ एक बस जलाई जा सकी।

बन्नू अब संभल नहीं रहा है। उसकी तरफ से हम ही कह रहे हैं कि

'वह मर जाएगा, पर झुकेगा नहीं!'

सरकार भी घबराई मालूम होती है। साधुसंघ ने आज मांग का समर्थन कर दिया।

ब्राह्मण समाज ने अल्टीमेटम दे दिया।

10 ब्राह्मण आत्मदाह करेंगे। सावित्री ने आत्महत्या की कोशिश की थी, पर बचा ली गयी।

बन्नू के दर्शन के लिए लाइन लग रही है।

राष्ट्रसंघ के महामंत्री को आज तार कर दिया गया।

जगह-जगह प्रार्थना सभाएं होती रहनीं। डॉ.लोहिया ने कहा है कि जब तक यह सरकार है, तब तक न्यायोचित मांगें पूरी नहीं होंगी। बन्नू को चाहिए कि वह सावित्री के बदले इस सरकार को ही भगा ले जाए।

## 21 जनवरी

बन्नू की मांग सिद्धांततः स्वीकार कर ली गयी।

व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए एक कमिटी बना दी गई है।

भजन और प्रार्थना के बीच बाबा सनकीदास ने बन्नू को रस पिलाया। नेताओं की मुसम्मियां झोलों में ही सूख गईं। बाबा ने कहा कि जनतंत्र में जनभावना का आदर होना चाहिए। इस प्रश्न के साथ कोटि-कोटि जनों की भावनाएं जुड़ी हुई थीं। अच्छा ही हुआ जो शांति से समस्या सुलझ गई, वना हिंसक क्रांति हो जाती।

ब्राह्मण सभा के विधानसभाई उम्मीदवार ने बन्नू से अपना प्रचार कराने के लिए सौदा कर लिया है। काफी बड़ी रकम दी है। बन्नू की कीमत बढ़ गयी।

चरण छूते नर-नारियों से बन्नू कहता है, सब ईश्वर की कृपा से हुआ। मैं तो उसका माध्यम हूँ।

नारे लग रहे हैं - सत्य की जय! धर्म की जय!

## पाठक मंच

मजदूर मोर्चा का 16-31 जनवरी, 2012 का अंक मिला जिसमें समकालीन विषयों पर काफी महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं। लेखकों द्वारा व्यंग्यात्मक लेखों 'एक प्राइवेट स्कूल की शिक्षिका से इंटरव्यू' तथा 'शिक्षण संस्थाओं के लिए एक नया कानून' के जरिये शिक्षा जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार पर गहरी चोट की गई है। सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र से अपने हाथ खींच लिये हैं और इसे निजी क्षेत्र के रहमोंकरम पर छोड़ दिया है। अधिकतर गैर सरकारी शिक्षा संस्थान कॉरपोरेट जनत द्वारा स्थापित व संचालित हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना और अपने उद्योगों के हितों की रक्षा करना होता है। ये शिक्षा संस्थान उद्योगों की तरह संचालित होते हैं जहां मानवीय व सामाजिक हित गौण रहते हैं। समाज का वह वर्ग जो सक्षम है, वही इन संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त कर सकता है, जबकि वंचित वर्ग के बच्चे सरकारी स्कूलों व कॉलेजों में जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं जहां न तो पर्याप्त सुविधा होती है और न ही पढ़ाने को पर्याप्त शिक्षक। इसके अतिरिक्त इन शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्य करने पर लगा दिया जाता है। व्यवहार में सरकार ने शिक्षा के प्रति उदासीनता का रवैया अपना रखा है।

एक अन्य लेख 'अंडमान-निकोबार में विदेशी सैलानी कर रहे नगनता का कारोबार' में लेखक शिवशंकर ने 'जारवा' जनजाति की औरतों द्वारा विदेशी पर्यटकों के सामने अर्द्धनग्न अवस्था में नाचने और इसका वीडियो बनाने के जरिये आदिवासी जनजातियों के प्रति सरकार की नीति की पोल खोल कर रख दी है। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार ऐसी नीति बनाये जिसके द्वारा इन आदिवासी जनजातियों को धीरे-धीरे जीवन की मुख्य धारा से जोड़ने की कोशिश करे और उन्हें मूलभूत सुविधाएं प्रदान करके उत्पादक कार्यों से जोड़ने का कार्यक्रम बनाये। अन्यथा ये आदिवासी जनजातियां इसी प्रकार मामूली लालच में अज्ञानतावश शिकार बनती रहेंगी। इसके अतिरिक्त 'मुस्लिम वोट के लिए सलमान रश्दी के विरोध में उतरे कठमुल्ले' लेख द्वारा लेखक ए.अहमद ने 'जयपुर लिट्टेचर फेस्टिवल' के संदर्भ में सरकार की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष और अभिव्यक्ति की आजादी की नीति का दोगलापन उजागर करके सरकार के चरित्र का सटीक खुलासा किया है। लेखक शिवशंकर ने 'हमाम में सभी दल नंगे' लेख में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के संदर्भ में उचित विश्लेषण किया है। उत्तर प्रदेश के साथ अन्य चार राज्यों - पंजाब, उत्तराखंड, गोवा व मणिपुर के विधानसभा चुनावों में भी जनता के सामने यही असमंजस की स्थिति है। चुनाव लड़ रहे राजनीतिक दलों व उम्मीदवारों का कोई सिद्धांत नहीं है। उनका केवल एक सिद्धांत है - येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना और सत्ता की मलाई में हिस्सेदारी करना। प्रो.उदयवीर सिंह ने अपनी कविता 'सत्ता तू बड़ी नटनी' के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर सटीक व्यंग्य किया है। मजदूर मोर्चा अपने नाम को सार्थक करते हुए अपने हर अंक में मजदूरों की समस्या को प्रकाशित करता आ रहा है। श्रम विभाग एवं पीएफ विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों से सांठगांठ करके केवल लखानी वरदान गुप ही नहीं, अन्य उद्योगों का प्रबंधन भी श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ा कर मजदूरों का शोषण करने में लगा हुआ है।

- डॉ.जुगल किशोर गुप्ता, फरीदाबाद